महिषासुरमर्दिनिस्तोत्रम्

अयि गिरिनन्दिनि नन्दितमेदिनि विश्वविनोदिनि नन्दनुते
गिरिवरविन्ध्यशिरोधिनिवासिनि विष्णुविलासिनि जिष्णुनुते।
भगवति हे शितिकण्ठकुटुम्बिनि भूरिकुटुम्बिनि भूरिकृते
जय जय हे महिषासुरमर्दिनि रम्यकपर्दिनि शैलसुते ॥१

सुरवरवर्षिणि दुर्धरधर्षिणि दुर्मुखवर्षिणि हर्षरते
त्रिभुवनपोषिणि शंकरतोषिणि किल्बिषमोषिणि घोषरते।
दनुजनिरोषिणि दितिसुतरोषिणि दुर्मदशोषिणि सिन्धुसुते
जय जय हे महिषासुरमर्दिनि रम्यकपर्दिनि शैलसुते ॥२

अयि जगदम्ब मदम्बकदम्ब वनप्रिय वासिनि हासरते
शिखरिशिरोमणि तुङ्गहिमालय शृङ्गनिजालय मध्यगते।
मधुमधुरे मधुकैटभगञ्जिनि कैटभभञ्जिनि रासरते
जय जय हे महिषासुरमर्दिनि रम्यकपर्दिनि सैलसुते॥३

अयि शतखण्डविखण्डितरुण्डवितुण्डितशुण्डगजाधिपते
रिपुगजगण्डविदारणचण्डपराक्रमशुण्डमृगाधिपते।
निजभुजदण्डनिपातितखण्डविपाटितमुण्डभटाधिपते
जय जय हे महिषासुरमर्दिनि रम्यकपर्दिनि शैलसुते॥४

अयि रणदुर्मदशत्रुवधोदित दुर्धरनिर्जर शक्तिभृते
चतुरविचारधुरीणमहाशिव दूतकृतप्रमथाधिपते।
दुरितदुरीहदुराशयदुर्मतिदानव दूतकृतान्तमते
जय जय हे महिषासुरमर्दिनि रम्यकपर्दिनि शैलसुते॥५

अयि शरणागतवैरिवधूवरवीरवराभयदायिकरे
त्रिभुवनमस्तकशूलविरोधिशिरोधिकृतामलशूलकरे।
दुमिदुमि तामर दुन्दुभिनाद महोमुखरीकृततिग्मकरे
जय जय हे महिषासुरमर्दिनि रम्यकपर्दिनि शैलसुते॥६

अयि निजहंकृति मात्रनिराकृत धूम्रविलोचनधूम्रशते
समरविशोषित शोणितबीज समुद्भवशोणितबीजलते।
शिव शिव शुम्भनिशुम्भमहाहव तर्पित भूतपिशाचरते
जय जय हे महिषासुरमर्दिनि रम्यकपर्दिनि शैलसुते॥७

धनुरनुषङ्गर रक्षणसङ्ग परिस्फुरदङ्ग नटात्कटके
कनकपिशङ्ग पृषत्क निषङ्ग रसद्भटशृङ्गहतावटुके।
कृतचतुरङ्ग बलक्षितिरङ्ग घटद्बहुरङ्ग रटद्बटुके
जय जय हे महिषासुरमर्दिनि रम्यकपर्दिनि शैलसुते॥८

सुरललनात तथेयितथेयि तथाभिनयोत्तम नृत्यरते
हासविलासहुलासमयिप्राण तार्तजनेमितप्रेमभरे।
धिमिकिट धिक्कट धिक्कट धिमिध्वनि घोरमृदङ्ग निनादलते
जय जय हे महिषासुरमर्दिनि रम्यकपर्दिनि शैलसुते॥९

जय जयजप्य जयेजयशब्द परस्तुतितत्परविश्वनुते
झणझणझिन् झिमि झिङ्कृत नूपुरशिन्जितमोहितभूतपते।
नटित नटार्धनटीनट नायकनाटितनाट्यसुगानरते
जय जय हे महिषासुरमर्दिनि रम्यकपर्दिनि शैलसुते॥१०

अयि सुमनस् सुमनस् सुमनस् सुमनस् सुमनोहरकान्तियुते
शृतरजनी रजनी रजनी रजनी रजनीकर वक्त्रवृते।
सुनयनवि भ्रमर भ्रमर भ्रमर भ्रमर भ्रमराधिपते
जय जय हे महिषासुरमर्दिनि रम्यकपर्दिनि शैलसुते॥११

सहितमहाहव मल्लम तल्लिक मल्लित रल्लक मल्लरते
विरचित वल्लिक पल्लिक मल्लिक झिल्लिक झिल्लिक वर्गवृते।
सितकृतफुल्ल समुल्ल सितारुण तल्लज पल्लव सल्ललिते
जय जय हे महिषासुरमर्दिनि रम्यकपर्दिनि शैलसुते॥१२

अविरलगण्ड गलन्मद मेदुर मत्तमतंगज राजपते
त्रिभुवनभूषणभूतकलानिधि रूपपयोनिधिराजसुते।
अयि सुदतीजनलालसमानस मोहनमन्मथराजसुते
जय जय हे महिषासुरमर्दिनि रम्यकपर्दिनि शैलसुते॥१३

कमल दलामल कोमलकान्ति कलाकलितामल भाललते
सकलविलास कलानिलयक्रम केलिचलत्कलहंसकुले।
अलिकुलसंकुल कुवलय मणडल मौलिमिलद्बकुलालिकुले
जय जय हे महिषासुरमर्दिनि रम्यकपर्दिनि शैलसुते॥१४

करमुरली रववीजित कूजित लज्जित कोकिलमञ्जुमते
मिलित पुलिन्द मनोहरगुञ्जित रञ्जित शैल निकुञ्जगते।
निजगुणभूत महाशबरीगण सद्गुण संभृत केलितले
जय जय हे महिषासुरमर्दिनि रम्यकपर्दिनि शैलसुते॥१५

कटितटपीत दुकूलविचित्र मयूखतिरस्कृत चन्द्ररुचे
प्रणतसुरासुर मौलिमणिस्फुर दंशुलसन्नख चन्द्र रुचे।
जितकनकाचल मौलिपदोर्जित निर्जर कुञ्जर कुम्भकुचे
जय जय हे महिषासुरमर्दिनि रम्यकपर्दिनि शैलसुते॥१६

विजितसहस्र करैकसहस्र करैकसहस्र करैकनुते
कृतसुरतारक संगरतारक संगरतारक सूनुनुते।
सुरथसमाधि समाण समाधि समाधि समाधि सुजात रते
जय जय हे महिषासुरमर्दिनि रम्यकपर्दिनि शैलसुते॥१७

पदकमलं करुणानिलये वरिवस्यति योनुदिनं नशिवे
अयि कमले कमलानिलये कमलानिलयस्स कथं न भवेत्।
तवपदमेवपरंपदमित्यनुशीलयतो ममकिं न शिवे
जय जय हे महिषासुरमर्दिनि रम्यकपर्दिनि शैलसुते॥१८

कनकलसत्कल सिन्धु जलैरनुसिन्चिनुते गुणरंगभुवं
भजतिसकिंन सचीकुचकुम्भ तटीपरि रम्भसुखानुभवम्।
तवचरणं शरणं करवाणि नतामरवाणि निवासि शिवे
जय जय हे महिषासुरमर्दिनि रम्यकपर्दिनि शैलसुते॥१९

तव विमलेन्दुकलं वदनेन्दु मलं सकलम् ननुकूलयते
किमुपुरुहूत पुरिन्दुमुखी सुमुखीभिरसौ विमुखीकृयते।
ममतुमतंशिवनामधने भवतीकृपया कमुत कृयते
जय जय हे महिषासुरमर्दिनि रम्यकपर्दिनि शैलसुते॥२०

अयि मयि दीनदयालुतया कृपयैवत्वया भवितव्यमुमे
अयि जगतोजननी कृपयासि यथासि तथानु मितासि रते।
यदुचितमात्र भवत्युररीकुरुता दुरुतापमपाकुरुते
जय जय हे महिषासुरमर्दिनि रम्यकपर्दिनि शैलसुते॥२१